* श्रीः *

शिवमहिम्नस्तोत्रम् ।

भाषाटीकासहितम् ।

श्री पं० माधवप्रसादव्यासेन संशोधितम् ।

...सा० ह० अयात् ह।०
भार्गवपुस्तकालयाध्यक्षेण
स्वकीये 'भार्गवभूषण' यन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।
विक्रमसंवत् १९९१

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

* श्रीगणेशाय नमः *

* अथ *

शिवमहिम्नस्तोत्रम् ।

भाषाटीकासहितम् ।

श्रीपुष्पदन्त उवाच ।

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृ-
शी स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्ना-
स्त्वयि गिरः॥ अथावाच्यः सर्वः स्वम-
तिपरिणामावधि गृणान् ममाप्येष
स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥ १ ॥

पुष्पदन्ताचार्य की प्रार्थना शिवजी के प्रति । हे हर ! ... तुम्हारी महिमा का पार नहीं पाया, उस मनुष्य की ... हुई स्तुति जो तुम्हारे अयोग्य हों तो ब्रह्मा आदि देवताओं ने जो स्तुति की है, वे भी पार नहीं पाये हैं। इससे सब मनुष्य वा देवता अपनी २ बुद्धि की पहुँच के अनुसार स्तुति

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

करते हैं । इस कारण हे दुःखहरण ! इस स्तोत्र से हमारी भी स्तुति का प्रारम्भ निर्दोष हो । कदाचित् कोई कहे कि महिमा का पार क्यों नहीं जाना जाता, इस कारण द्वितीय श्लोक कहते हैं ॥ १ ॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा
वाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्यायं चकित-
मभिधत्ते श्रुतिरपि ॥ स कस्य स्तोतव्यः
कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वा-
चीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ २ ॥

हे भगवन् ! तुम्हारी महिमा वाणी और मन प्रवृत्ति से परे और इन दोनों की प्रवृत्ति अर्थात् संसार के सब [illegible] में होती है, अर्थात् हे शिव ! तुमसे इधर उधर की वस्तुओं को सब कोइ जान सकना है, वेद भी सन्देह के ऊपर ही तुमको वर्णन करता है, जैसे कोई मनुष्य किसी से पूछे कि मोती कैसी है तो वह हाथ में रखकर दिखाता है । इस प्रकार से वेद का भी सामर्थ्य नहीं है कि प्रत्यक्ष करवा दे, तो कौन तुम्हारी स्तुति कर सके वा गुण जान सके ॥ २ ॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं
निर्मितवतस्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गुरोर्विस्मयपदम् ॥ मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥

हे ब्रह्मन् ! देवताओं के गुरु बृहस्पति जी की वाणी क्या तुमको कुछ आश्चर्य करवा सकती है ? क्योंकि ये अमृत के तुल्य मधुर और अलङ्कार सहित वाणियों के कर्ता हैं। यदि उनकी यह रीति है, तो मेरा क्या सामर्थ्य है । हे त्रिपुरदहन ! मैंने तो केवल तुम्हारे गुणों के निमित्त यत्न किया है ॥ ३ ॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ॥ अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥ ४ ॥

हे वरद ! तीनों वेदों से वर्णनीय जगत् की उत्पत्ति, रक्षा और प्रलय का कारण जो तुम्हारा ऐश्वर्य है, सो सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, विशिष्ट तीनों शरीरों में वर्तमान है, अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव ये तीनों तुम्हारा ही सामर्थ्य है

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करते हैं । हे भगवन् ! इस संसार में कोई मन्दमति मीमांसक आदि तुम्हारे ऐश्वर्य में संभव नहीं हो सकती है, परन्तु दुर्भागी मनुष्य को रमणीय लगती है ॥ ४ ॥

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ॥ अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥

कोई मन्दमति संसार के अज्ञान के निमित्त वा यमर में जाने का यह कुतर्क करते हैं कि यह ब्रह्मा किसी चेष्टा से किसी शरीर से वा कोई उपाय और कोई निमित्त कारण से तीनों लोकों को उत्पन्न करता है, क्योंकि तुम्हारे ऐश्वर्य को संसार उत्पन्नकरने के लिये कोई सामग्री अपेक्षित नहीं है॥५॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगतामधिष्ठातारं किं भवविधिरना-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हत्य भवति॥ अनीशो वा कुर्याद्भुवन-
जनने कः परिकरो यतो मन्दास्त्वां
प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥

हे भगवन् ! भू आदि जो सात लोक हैं वे सावयव हैं। इनकी उत्पत्ति क्या किसी से नहीं है ? जो अवयव सहित हैं, वे उत्पत्ति सहित हैं। बिना चेतन अधिष्ठान से संसार की रचना संभव नहीं हो सकती और कदाचित् बिना चेतन बिना ईश्वर के संसार की उत्पति है तो उत्पत्ति में क्या सामग्री अपेक्षित हैं, जिस कारण मन्दमति मीमांसक आदि ईश्वर के होने में सन्देह करते हैं, अर्थात तुम्हारे होने में किसी को सन्देह नहीं है ॥ ६ ॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं
वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिद-
मदः पथ्यमिति च ॥ रुचीनां वैचित्र्या-
दृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको
गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे भगवन् ! वेद, सांख्यशास्त्र, योग, पाशुपत्य और वैष्णव इन पाचों में भिन्न भिन्न मार्ग का वर्णन है । अपनी २ रुचि के अनुसार इन मार्गों पर चलने वाले मनुष्य को परिणाम में गम्य एक तुमहीं हो । जैसे सीधे या टेढ़े मार्ग में बहती हुई नदियों का गम्य एक समुद्र ही है ॥ ७ ॥ +

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ॥ सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रू प्रणिहितां न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥

हे वरद ! तुम्हारे घर की सामग्री केवल इतनी वस्तु है । महोक्ष अर्थात् बड़ा बैल, खट्वाङ्ग अर्थात् दण्ड के ऊपर का ब्रह्मकपाल, परन्तु देव ही केवल तुम्हारी दी हुई ऋधियों को क्यों भोगते हैं, तो विषयरूपी मृगतृष्णा ब्रह्मप्राप्त मनुष्य को भ्रमा नहीं सकती ॥ ८ ॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वद्ध्रुवमिदं परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति ग-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दति व्यस्तविषये॥ समस्तेऽप्येतस्मिन्
पुरमथनतैर्विस्मित इव स्तुवञ्जिह्रेमि
त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

कोई कोई बुद्धिमान् इस संसार को स्थिर और कोई अस्थिर और कोई स्थिरास्थिर (मिला हुआ) वर्णन करते हैं। इस संसार के स्थिर, अस्थिर और स्थिरास्थिर होने में प्रमाण न मिलने से बड़े भ्रम में डूब कर हे भगवन्! तुम्हारी बराबर स्तुति करता हुआ लज्जित होता हूँ ॥ ९ ॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो ह-
रिरधः परिच्छेत्तुं यातावनलमनिल-
स्कन्धवपुषः ॥ ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरु-
गृणद्भ्यां गिरिश यत् स्वयं तस्थे
ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥१०॥

भगवन्! तुम्हारे ऐश्वर्य का छोर देखने को बड़े यत्न से विष्णु तो नीचे और ब्रह्मा ऊपर को गये तो भी वायुरूपी तुम्हारे स्वरूप को न प्राप्त हो सके, फिर बैठ कर भक्ति और श्रद्धा से जब तुम्हारी स्तुति करने लगे तो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रत्यक्ष हुये । क्या तुम्हारी सेवा निष्फल होती है ? नहीं, सफल ही होती है ॥ १० ॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यति-
करं दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डू-
परवशान् ॥ शिरः पद्मश्रेणीरचितचर-
णाम्भोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रि-
पुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥ ११ ॥

हे त्रिपुरासुर के मारक शिव ! रावण ने अपने शिररूपी कमलों से तुम्हारे चरणों का पूजन किया तो इस दृढ़ भक्ति के प्रताप से तीनों लोकों को बिना परिश्रम से निर्वैरी अर्थात् निष्कण्टक करके अपनी भुजाओं को जो केवल संग्राम को चाहती थी, धारण किया ॥ ११ ॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुज-
वनं बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ वि-
क्रमयतः ॥ अलभ्या पातालेऽप्यलस-
चलिताङ्गुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्या-
सीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जिस रावण ने तुम्हारी सेवा के प्रताप से बड़ा बलवान् भुजाओं का समूह प्राप्त किया, जिसने तुम्हारे निवास कैलास को भी उठा लिया, फिर जब आपने स्वाभाविक पाँव के अँगूठा से पर्वत को दाबा, तब रावण की प्रतिष्ठा पाताल तक न हुई, मूर्खजन बढ़ के अभिमान को प्राप्त होते हैं ॥१२॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीमधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ॥ न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥

हे भगवन्! तुम्हारे चरणों के पूजन के प्रताप से त्रिभुवन को वशीभूत करके परम उच्च इन्द्रपद को बाणासुर ने जो तिरस्कृत किया तो क्या आश्चर्य है? क्योंकि तुम्हारे सामने जो शिर झुकाता है, वह सबही वृद्धि के लिये है ॥ १३ ॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपाविधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः ॥ स कल्माषः कण्ठे तव

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

न कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥ १४ ॥

हे भगवन् ! जिस समय समुद्र से हलाहल विष निकला तो देवता और राक्षसों को यह भय हुआ कि कहीं असमय में ही संसार का प्रलय न हो जाय । तब कृपा करके उनकी रक्षा के लिये आपने जो महाघोर विष धारण किया, सो आप के कण्ठ में विष भी अत्यन्त शोभा दे रहा है । भुवन के भय को दूर करने वालों का विकार भी अच्छा लगता है ॥ १४ ॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ॥ सपश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

हे ईश ! जिसके बाण ऐसे प्रबल हैं कि देवता, राक्षस, मनुष्यों से व्याप्त इस संसार में बिना अपना प्रयोजन सिद्ध किये कभी निवृत्त नहीं होते हैं । हे शिव ! तुमको भी और देवताओं के तुल्य साधारण देखने से उस कामदेव का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नाम मात्र बाकी रह गया अर्थात् नेत्र से उसका शरीर भस्म हो गया, क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष है कि जितेन्द्रियों का अनादर करना सुखकारी नहीं होता ॥ १५ ॥

मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ॥ मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥

हे भगवन् ! तुम संसार की रक्षा करने के निमित्त नृत्य करते रहते हो अर्थात् राक्षसों को नृत्त के आनन्द में डाल कर उनसे रक्षा करते हो, और नृत्त के समय चरण की धमक से पृथ्वी भी सन्देह करती है कि मैं टूटी जाती हूँ वा पाताल में घुसी जाती हूँ । इसी प्रकार भुजाओं के घूमने से विष्णु के स्थान, आकाश में तारागण खण्ड खण्ड हो गये और इस प्रकार लम्बी लम्बी शिखा को बार २ झटकारने से स्वर्ग आप को कठिनता से थाम रहा है । हे शिव ! तुम्हारी प्रभुता बड़ी विलक्षण है ॥ १६ ॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शिरसि ते ॥ जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥

हे शिव तारागणों से चमकता हुआ जलसमूह जो आकाश पर्यन्त व्याप्त हो रहा है, सो आपके शिर पर सूक्ष्म जलकणिका के समान दृष्टि आता है, परन्तु आपने उतने ही जल से समुद्र करके इस महाद्वीपाकार संसार को चारो ओर से घेर लिया है, सो हे भगवन् ! आप के दिव्य शरीर का विस्तार दृष्टान्त से अनुमान करने योग्य है ॥ १७ ॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ॥ दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥

हे भगवन् ! तृण तुल्य त्रिपुरासुर के नाश करने को आपने इतना आडम्बर अर्थात् पृथ्वी का रथ, नियन्ता ब्रह्मा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जी, हिमालय पर्वत का धनुष, रथ का चक्र अर्थात् पहिये चन्द्रमा और सूर्य, श्री विष्णु रूपी रचा है । सो क्या तर तोड़ने को भी बड़े २ अपेक्षित होते हैं ? इस कुतर्क का यह उत्तर है कि तीव्र बुद्धिजन खेल में भी निर्बल के आधीन नहीं होते हैं, सदा स्वतन्त्र ही रहते हैं ॥ १८ ॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोर्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्र-कमलम् ॥ गतो भक्त्युद्रेकः परिणति-मसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर-हर जागर्ति जगताम् ॥ १९ ॥

हे त्रिपुरहर ! श्रीकृष्णजी सहस्र कमल लेकर आपके चरणारविन्दों का पूजन करते एक कमल कम रहा देखकर भक्ति की दृढ़ता से उन्होंने अपना नेत्ररूपी कमल निकाल पूजन पूर्ण कर दिया । श्रीकृष्णजी की यह दृढ़ भक्ति सुदर्शन चक्र गदारूपी होकर तीनों लोकों की रक्षा कर रही है ॥ १९ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोग

क्रतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ॥ अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

हे भगवन् ! आपही को यज्ञ का फलदाता समझ कर और देव में दृढ़ विश्वास कर मनुष्य कर्मों को आरम्भ करते हैं, क्योंकि जब क्रियारूप समाप्त होता है तो आपही विद्यमान रहते हो। कदाचित् कहो कि नष्ट कर्म ही फल देता है तो निश्चय है कि चैतन्य पुरुष के आराधना बिना नष्ट कर्म भी फलदायक नहीं हो सकता। आशय यह है कि सर्वयज्ञ के फलदाता आपही हो ॥ २० ॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ॥ क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः॥२१॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

क्रिया में कुशल दक्ष प्रजापति जैसा यज्ञकर्ता और जिसकी सभा में ब्रह्मा आदि देवताओं के समूह और बड़े २ ऋषि जिसमें आचार्य अर्थात् यज्ञ कराने वाले हैं, इतने पर भी वह यज्ञ बिगड़ जाय तो आश्चर्य है। सो हे भगवन्! आपकी अश्रद्धा ही बिगाड़ का कारण है, क्योंकि कर्ममात्र के फलदाता आपही हैं। आपकी श्रद्धा से रहित जितना कर्म किया जाय वह सब निष्फल ही होगा ॥ २१ ॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषु मृष्यस्य वपुषा ॥ धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २२ ॥

किसी समय ब्रह्मा काम के वश हो रमण की इच्छा से अपनी कन्या के ऊपर दौड़े, तब वह कन्या अधर्म के भय से मृगी बनकर भाग चली। उसी समय ब्रह्मा ने भी मृग का रूप धारण कर उसका पीछा किया, सो हे भगवन्! उस समय आपने ऐसी अनीति देखकर मृग पर धनुष हाथ में लेकर आखेट का उत्साह किया तो वह ब्रह्मा स्वर्ग तक भागे, परन्तु आपके धनुष ने आज तक उसकापीछा नहीं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आपका धनुष बाण अन्यायियों का पीछा कभी नहीं छोड़ता है ॥ २२ ॥

स्वलावरायाशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणावत्पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ॥ यदि स्त्रैणं देवीयमनिरतदेहार्धघटनादवैति त्वामद्धा वत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥

हे भगवन् ! आपने धनुषधारी काम को शीघ्र ही भस्म किया, फिर उसका आधा शरीर उत्पन्न कर अपने शरीर में धारण किया । यह चरित्र देखकर निज स्वरूपाभिमानिनी पार्वतीजी आपको व्यभिचारी कहती हैं, क्योंकि कामदेव को भस्म किया, और फिर उत्पन्न कर अपने शरीर में धारण किया । परन्तु हे भगवन् ! आपमें यह दोष लगाना यथार्थ में सत्य नहीं है, क्योंकि युवती स्त्री अर्धाङ्गिनी होती है, उनके कहने का क्या ठीक है ॥ २३ ॥

श्मशानेष्वाक्रीड़ा स्मरहर पिशाचा सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

न्‍कोरोटी परिकरः ॥ अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥

हे भगवन् ! यद्यपि आपके स्थान और आभूषण आदि अमङ्गल पदार्थ हैं, जिनके देखने या सुनने से का ग्लानि और भय होता है। जैसा कि श्मशान तो खेलने का स्थान, खिलाड़ी भूत पिचाश आदि, आभूषण चिता का भस्म शरीर में लगा हुआ, मनुष्यों की खोपड़ियों और सर्पों की माला पहिरे हुए, ये सब अमङ्गल हैं तो भी हे वरद ! स्मरण करनेवाले को आप सर्वदा मङ्गलरूपी ही हो ॥२४॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सारितदृशः ॥ यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ।२५।

हे भगवन् ! योगी जन वायु को रोककर और आत्मा को अन्तःकरण में ठहरा कर अनिर्वचनीय तत्त्व को देखकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आनन्द करते हैं। इसी आनन्द से उनके रोमाञ्च हो गये और नेत्र तृप्त हुए, मानों अमृतमय तालाव में स्नान कर रहे हैं। वह अनिर्वचनीय तत्त्व आप ही का स्वरूप है ॥२५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवन-
स्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धर-
णिरात्मा त्वमिति च ॥ परिच्छिन्ना-
मेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं न
विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न
भवसि ॥ २६ ॥ ३१.

हे भगवन्! सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, जल, आकाश, पृथ्वी और आत्मा आदि जितने जड़ व चेतन पदार्थ हैं सब तुम्हारे स्वरूप हैं, परिपक्व मतिवाले तुम्हारे विषय में इतना ही वर्णन कर सके हैं, आगे उनकी बुद्धि का बल चल नहीं सकता। आशय-यह है कि ऐसा कोई पदार्थ हम नहीं देखते जिनमें तुम व्यापक न हो ॥ २६ ॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो
त्रीनपि सुरानकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभि-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दधत्तीर्णाविकृति ॥ तुरीयं ते धाम ध्व
निभिरवरुन्धानमणुभिः समस्तव्यस्त
त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥ २७

हे भवगन् ! ओंपद सब में व्यापक होकर अर्था
अकार आदि वर्णों से ऋग् यजुः साम, तीनों वृत्ति, उदा
अनुदात्त, स्वरित, तीनों लोक स्वर्ग, मृत्यु और पाताल
तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इनको धारण करता हुआ
आप का जो चौथा निर्विकार धाम है, जिसको तुरीय कह
है, उसको भी धारण करता हुआ हे शरणद ! समस्त अ
व्यस्त ऐसे आप की स्तुति किया करता है ॥ २७ ॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह
हांस्तथा भीमेशानाविति यदभिधान
ष्टकमिदम् ॥ अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रवि
चरति देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम
प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥ २८

हे भगवन् ! भव १ शर्व २ रुद्र ३ पशुपति ४ उग्र
सहमहान् अर्थात् महादेव ६ भीम ७ और ईशानये ८

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आप के ८ नाम हैं और आप ही का गुण वर्णन करते हैं। प्रीति के निमित्त तथा भव नाम से उत्पत्तिकर्त्ता, रुद्र से रोदनकर्त्ता, पशुपति से जीवमात्र का पालक, उग्र से क्रोधकर्ता, सहमहान् अर्थात् महान्विशिष्ट, भीम अर्थात् भयङ्कर, ईशान से ऐश्वर्यविशिष्ट, मैं आपको नमस्कार करता हूँ ॥ २८ ॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदवदविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ॥ नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥ २९ ॥

हे कामदेवनाशक! आप समीपवर्ती हो और दूरवर्ती भी हो, सूक्ष्म से सूक्ष्म और बड़े से बड़े रूप को धारण करते हो, सब रीति से तुमको नमस्कार है ॥ २९ ॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ॥ जनसुखकृते सत्त्वोद्रि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कौ मृडाय नमो नमः प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३० ॥

संसार की उत्पत्ति के समय आपने रजोगुणसहित जो भवरूप धारण किया और सृष्टि के पालन करने का सत्यगुणसहित सत्यरूप और प्रलय करने के समय तमोगुण सहित हररूप धारण किया, मोक्ष के समय तीनों गुणों से रहित अर्थात् निर्गुण शिव शान्तरूप धारण किया। हे भगवन् ! आपके अनेक रूपों को नमस्कार है ॥ ३० ॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ॥ इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥

हे भगवन् ! आपके गुणों का तो पार नहीं और मेरा चित्त राग, द्वेष और क्लेश आदि के वश होकर परिणाम में दुर्लभ है। इसी प्रकार जब मैं गुणों के वर्णन से भयभीत हुआ तब मेरी भक्ति ने उत्साह करवा कर वाणीरूपी फूल की माला आपके चरणारविन्दों में पहनवाय दी। आशय यह है कि पुष्पदन्ताचार्य कहते हैं कि मेरा सामर्थ्य नहीं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जो आपके गुणों का वर्णन करूँ परन्तु मेरी भक्ति ने यत्किञ्चित् वर्णन करवाया है ॥ ३१ ॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनीपत्रमुर्वी॥ लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति * ॥ ३२ ॥

हे भगवन्! कदाचित् सरस्वती श्याम पर्वत के तुल्य काजल समुद्ररूपी दावात में डाल कर कल्पवृक्षरूपी लेखनी से आपके गुणों को लिखे तो भी पार को प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि आपके अनन्त गुण हैं और हमारा तो क्या सामर्थ्य है जो गुण वर्णन कर सकें ॥ ३२ ॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ॥ सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो

* शिवजी की महिमा के ये ३२ श्लोक हैं। इसके आगे स्तोत्र के पठन तक स्तोत्र की प्रशंसा और अपने नाम की विशेषता लिखते हैं ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३॥

सकल गुणों में श्रेष्ठ पुष्पदन्ताचार्य ने देवता और राक्षसों से पूजित और चन्द्रमा जिनके मस्तक पर शोभायमान हैं और निर्गुण होने पर भी प्रसिद्ध जिनके गुण हैं ऐसे शिवजी की स्तुति मनोहर विस्तृत श्लोकों से कही है ॥३३॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत् पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ॥ स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥

श्रीमहादेवजी के इस निर्दोष स्तोत्र को जो प्रतिदिन पढ़ेगा, वह शिवलोक में रुद्र के तुल्य गिना जायगा और इस लोक में धन, आयु, सन्तान और सत्कीर्ति बहुत पावेगा॥३४॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ॥ महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ३५ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दीक्षा, दान, तप, तीर्थ करना, ज्ञान और यज्ञ आदि कर्म जो हैं, वे महिम्नस्तोत्र के पाठ से जो फल प्राप्त होता है उसके सोलहवें भाग के भी तुल्य फल नहीं देते ॥३५॥

समाप्तिमगमत् स्तोत्रं पुष्पगन्धर्व-भाषितम् ॥ अनूपमं मनोहारि पुण्य-मीश्वरवर्णनम् ॥ ३६ ॥

गन्धर्व अर्थात् पुष्पदन्ताचार्य का कहा हुआ यह सम्पूर्ण महिम्न स्तोत्र पुण्यकारी हैं, इसके तुल्य दूसरा कोई स्तोत्र नहीं है, इसमें ईश्वर का ही वर्णन है ॥ ३६ ॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नाप-रा स्तुतिः ॥ अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३७ ॥

महादेवजी से बड़ा कोई देवता नहीं, महिम्नस्तोत्र से बड़ा कोई स्तोत्र नहीं, अघोर मन्त्र से बड़ा कोई मन्त्र नहीं और गुरु से अधिक कोई तत्त्व नहीं है ॥ ३७ ॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ॥ स

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ३८ ॥

ये पुष्पदन्ताचार्य जो पहिले योनि में कुसुमदशन नामक गन्धर्व थे, ये किसी समय एकान्त में शिवजी और पार्वती की आनन्द की बातें छिपकर सुनने लगे तो शिवजी ने देखते ही यह शाप दिया कि–"जाओ तुम गन्धर्व पदवी से पतित होकर मनुष्यलोक में जन्म लो"। तब उन्होंने यहाँ जन्म लेकर परमदिव्य इस महिम्नस्तोत्र से शिवजी को अत्यन्त प्रसन्न कर मनोवाञ्छित फल प्राप्त किया ॥ ३८ ॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ॥ व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ३९ ॥

पुष्पदन्ताचार्य से कथित जो यह निर्दोष महिम्नस्तोत्र है। यह कैसा है कि देवता और मुनियों से पूजित और स्वर्ग तथा मोक्ष के प्रीति का कारण है। ऐसे स्तोत्र को जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मनुष्य स्थिरचित्त होकर हाथ जोड़कर पढ़ता है, वह शिवजी के समीप प्राप्त होता है और उसकी स्तुति किन्नर और गन्धर्व आदि करते हैं ॥ ३९ ॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपंकजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ॥ कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ४० ॥

श्रीपुष्पदन्ताचार्य के मुखारविन्द से कहा हुआ जो यह पापनाशक महिम्नस्तोत्र है, चित्त लगा कर इसका कण्ठ पाठ करने से भूतपति श्रीमहादेवजी अत्यन्त प्रसन्न होते हैं, क्योंकि शिवजी को यह अत्यन्त प्रिय है ॥ ४० ॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेत् सदा ॥ भवपाशविनिर्मुक्तः शिवलोकं स गच्छति ॥ ४१ ॥

जो मनुष्य इस महिम्नस्तोत्र को एक बार दो बार या तीन बार नित्य पढ़ेगा, वह संसार की फांसी से छूटकर शिवलोक को प्राप्त होगा ॥ ४१ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः ॥ अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः ॥ ४२ ॥

यह स्तोत्ररूपी पूजा श्रीमहादेवजी के चरणकमलपर मैं (पुष्पदन्ताचार्य) ने चढ़ाई । इससे श्रीसाम्ब सदाशिव मुझ पर सन्तुष्ट होवै ॥ ४२ ॥

इति श्रीपुष्पदन्ताचार्यविरचितं शिवमहिम्नस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

* शिवताण्डवस्तोत्रम् *

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्बिलम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १ ॥
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ २ ॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३ ॥
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मन्दान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ ४ ॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालिसम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥ ५

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥ ६ ॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने मतिर्मम ॥ ७ ॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर-
त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबन्धुकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ ८ ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमच्छटा-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विडम्बिकण्ठकन्धरारुचिप्रबन्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥९॥
अगर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥
जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमस्फुर-
द्धगद्धगद्विनिर्गमत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समं प्रवर्तयन् मनः कदा सदाशिवं भजे ॥१२॥
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका–
निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ।
तनोतु नो मनो मुदं विनोदिनी महानिशं
परश्रियः परं पदं तदङ्गजत्विषां चयः ॥ १४ ॥

प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारिणी–
महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पिनी ।
विमुक्तवामलोचनं विवाहकालिकध्वनिः
शिवेति मन्त्रभूषणं जगज्जयाय जायताम् ॥ १५ ॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमस्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ स भक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां तु शङ्करस्य चिन्तनम् ॥ १६ ॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥ १७ ॥

इति श्रीरावणविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीशिवार्पणमस्तु ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मुद्रक — बाबू ... प्रेस, बनारस सिटी